International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विभिन्न समुदाय के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों का अध्ययन

किरण कुमारी
गृह विज्ञान
ल०ना०मि०वि०, दरभंगा

सार संक्षेप

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विभिन्न समुदाय के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों का अध्ययन करना था। इसके लिए मधुबनी जिला (शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों) से कुल 150 व्यक्तियों का चयन उद्देश्यपूर्ण चयन विधि के आधार पर किया गया। उत्तरदाताओं की उम सीमा 25 वर्ष से लेकर 35 वर्ष थी। शोधार्थी द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रश्नावली का उपयोग करते हुए उत्तरदाताओं के उपर प्रशासित किया गया और संगत सूचनाएँ संग्रहित की गई। सूचनाओं के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि (i) अनुसूचित वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्ग के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक थी, (ii) शिक्षित परिवार की अपेक्षा अशिक्षित परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक थी, (iii) अल्पसंख्यक समुदाय के परिवारों में हिन्दू परिवारों की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक थी एवं (iv) निम्न स्तर के कार्य करने वाले उत्तरदाताओं के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक थी।

परिचय :

मानवीय सभ्यता, संस्कृति के जनक, प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादनकर्त्ता, उपभोक्ता एवं संरक्षक के रूप में मानव एक मुख्य संसाधन है। चूँकि मानव सभी साधनों का माध्यम है। इसलिए भी मनुष्य को मानव संसाधन की संज्ञा दी गई है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति मानव के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक विकास पर निर्भर करता है। दूसरे भाव के रूप में कहा जा सकता है, कि किसी राष्ट्र की सम्पन्नता एवं उन्नति का अंदाजा, उस राष्ट्र के लोगों के मानवीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक सम्पन्नता के आधार पर लगाया जा सकता है।

विभिन्न मानवीय समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि की समस्या एक मौलिक एवं मुख्य समस्या मानी जाती है, क्योंकि अत्यधिक जनसंख्या न केवल व्यक्ति एवं परिवार को बल्कि क्षेत्र, राज्य एवं राष्ट्र को भी हानि पहुँचाती है। जनसंख्या का अनियंत्रित विस्फोट, व्यक्ति की योग्यता, स्वास्थ्य एवं प्रशन्नता को

परिवार के आर्थिक स्तर एवं उनके सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्त्ति की, राष्ट्र के आर्थिक प्रगति व वैभव को तथा विश्व में शान्ति की स्थापना को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। इस प्रकार भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि तथा परिवार के बढ़ते आकार को मानवीय समस्या का मुख्य ध्रुवीय कारक माना गया है।

विभिन्न शोध अध्ययनों के आधार पर बताया गया है, कि हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि की जो प्रवृत्ति है, वह असमान प्रवृत्ति है। जनसंख्या वृद्धि के संबंध में सुस्मिता (2009) ने अपना शोध अध्ययन किया है और निष्कर्ष के आधार पर बताया है, कि भारत में जनसंख्या वृद्धि के पीछे लोगों के जीवन–स्तर में भिन्नता, धार्मिक विश्वास एवं बेरोजगारी जबावदेह कारक है।

एक अन्य अध्ययन में रेखा 2010 ने पाया है, कि धार्मिक विश्वास में भिन्नता जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारक है। इसी संदर्भ में कृष्णा (2010) का मानना है, कि हिन्दूओं में जनसंख्या वृद्धि की तुलना में मुसलमानों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति अधिक है।

रागिनी (2000) ने जनसंख्या वृद्धि के संबंधित अध्ययन परिणाम में पाया है, कि सामाजिक–सांस्कृतिक कारक एवं शैक्षिक कारक जनसंख्या वृद्धि के लिये जबावदेह कारक होता है।

पंडा (1999) ने परिवार कल्याण कार्यक्रम के क्रियान्वयन एवं भूमिका संबंधी अध्ययन के परिणाम में पाया है, कि परिवार नियोजन की आवश्यकता केवल जन्म दर रोकने के लिये नहीं बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक दृष्टिकोण से अतिआवश्यक है।

भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण रिपोर्ट 1993 में कहा गया है, कि एक स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण के लिये छोटा परिवार की अवधारणा होना आवश्यक है। इसके बाद हों सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से देश सम्पन्न हो सकता है।

इस तरह, अनेकों पूर्व के अध्ययनों की समीक्षाएँ उपलब्ध है। लेकिन इन अध्ययनों में जनसंख्या वृद्धि संबंधी प्रवृत्तियों से संबंधित अध्ययनों में जनसंख्या वृद्धि संबंधी प्रवृत्तियों से संबंधित अध्ययनों की कमी को देखते हुए शोधार्थी द्वारा विभिन्न समुदाय के लोगों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों के अध्ययन से संबंधित शोध कार्य करने का निर्णय लिया गया है।

शोध का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विभिन्न समुदाय के लोगों में जनसंख्या वृद्धि के प्रवृत्तियों का अध्ययन करना था।

शोध की परिकल्पना :

प्रस्तुत शोध की मुख्य परिकल्पना थी कि जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ विभिन्न समुदाय के लोगों, उनकी शिक्षा स्तर, ग्रामीण–शहरी समुदाय एवं धर्म आधारित कारकों से प्रभावित होगी।

प्रतिदर्श :

प्रस्तुत शोध में मधुबनी जिला अन्तर्गत शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से कुल 150 प्रतिदर्शों का चयन किया गया। प्रतिदर्शों की उम्र सीमा 25 वर्ष से लेकर 35 वर्ष (औसत उम्र 30 वर्ष) थी।

प्रतिदर्श चयन की विधि :

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यात्मक चयन विधि का अवलोकन किया गया।

मापनी :

उत्तरदाताओं से संगत सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए निम्नांकित मापनियों का प्रयोग किया गया :

(i) प्रश्नावली मापनी :

उत्तरदाताओं के संबंध में नाम, पता, उम्र, सामाजिक संवर्ग, शहरी–ग्रामीण, निवास, शिक्षा, परिवार का प्रकार, परिवार में सदस्यों की संख्या, उनका शैक्षिक इतिहास, व्यवसाय, परिवार के सदस्यों की मनोवृत्ति इत्यादि की जानकारी के लिये व्यक्तिगत सूचना प्रश्नावली (स्वयं द्वारा विकसित) का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया :

उत्तरदाताओं से संगत सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए शोधार्थी द्वारा अच्छे तरीके से योजना बनाई गई। बनाई गई योजनानुसार शोधार्थी द्वारा अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया और लक्षित उत्तरदाताओं से सम्पर्क स्थापित किया गया। तत्पश्चात् उत्तरदाताओं को प्रदत्त संग्रह के संबंध में शोधार्थी द्वारा बताया गया और उन्हें विश्वास दिलाया गया कि उनके द्वारा दी गई सूचनाएँ गोपनीय रखी जायेगी। इसके बाद उत्तरदाताओं के साथ निर्धारित तिथि एवं समय पर पुनः सम्पर्क स्थापित किया गया और प्रदत्त संग्रह का कार्य किया गया। अशिक्षित उत्तरदाताओं से इसी प्रश्नावली पर साक्षात्कार विधि का अवलोकन करते हुए प्रदत्त संग्रह का कार्य किया गया। सभी उत्तरदाताओं को सफलतापूर्वक प्रदत्त संग्रह में आवश्यक सहयोग के लिए धन्यवाद दिया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण :

संग्रहित किये गये सूचनाओं का विश्लेषण विश्लेषणात्मक पद्धति के आधार पर किया गया एवं समसामयिक संदर्भ में परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम :

प्रस्तुत शोध में संग्रहित प्रदत्तों के विश्लषण के आधार पर निम्नांकित परिणाम प्राप्त किये गये :

सारणी संख्या (i)
विभिन्न सामाजिक वर्गों के परिवार में बच्चों की संख्या संबंधी उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ :

क्र० सं०	समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ	
			2 से कम बच्चों वाले परिवारों की सं०	2 से अधिक बच्चों वाले परिवारों की सं०
1	सामान्य संवर्ग	50	27 (54%)	23 (46%)
2	पिछड़ी जाति संवर्ग	50	18 (36%)	22 (44%)
3	अनुसूचित संवर्ग	50	13 (26%)	37 (74%)
4	अल्पसंख्यक संवर्ग	50	06 (12%)	44 (88%)

सारणी संख्या (ii)
विभिन्न शिक्षा स्तर वाले परिवार में बच्चों की संख्या संबंधी उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ :

क्र० सं०	समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ	
			2 से कम बच्चों वाले परिवारों की सं०	2 से अधिक बच्चों वाले परिवारों की सं०
1	शिक्षित उत्तरदाताएँ	100	76 (76%)	24 (24%)
2	अशिक्षित उत्तरदाताएँ	100	21 (21%)	79 (79%)

सारणी संख्या (iii)
विभिन्न धर्म आधारित परिवारों में उत्तरदाताओं की बच्चों की संख्या संबंधी अनुक्रियाएँ :

क्र० सं०	समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ	
			2 से कम बच्चों वाले परिवारों की सं०	2 से अधिक बच्चों वाले परिवारों की सं०
1	हिन्दू उत्तरदाताएँ	100	32 (32%)	68 (68%)
2	मुस्लिम उत्तरदाताएँ	100	21 (21%)	79 (79%)

सारणी संख्या (iv)

विभिन्न व्यवसाय करने वाले उत्तरदाताओं की बच्चों की संख्या संबंधी अनुक्रियाएँ :

क्र० सं०	समूह	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं की अनुक्रियाएँ	
			2 से कम बच्चों वाले परिवारों की सं०	2 से अधिक बच्चों वाले परिवारों की सं०
1	नौकरी	45	15 (33.33%)	30 (66.67%)
2	व्यवसाय	25	11 (44%)	14 (56%)
3	कृषि	70	31 (44.29%)	39 (55.71%)
4	औद्योगिक कार्यरत	30	12 (40%)	18 (60%)
5	निम्न स्तर के कार्य करने वाले उत्तरदाताए	30	07 (23.33%)	23 (76.67%)
6	कुल	200	75 (37.50%)	125 (62.50%)

व्याख्या :

सारणी संख्या (i) के अवलोकन से स्पष्ट है, कि सामान्य संवर्ग के कुल 50 उत्तरदाताओं में से 27 अर्थात् 54 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवार में 2 या 2 से कम बच्चे हैं, जबकि 73 अर्थात् 46 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवार में दो से अधिक बच्चे हैं। इसी तरह, पिछड़ा संवर्ग के कुल 50 उत्तरदाताओं में 18 अर्थात् 36 प्रतिशत, अनुसूचित संवर्ग के कुल 50 उत्तरदाताओं में 13 अर्थात् 26 प्रतिशत एवं अल्पसंख्यक संवर्ग के कुल 50 उत्तरदाताओं में मात्र 6 अर्थात् 12 प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवार में 2 से कम बच्चे हैं, जबकि पिछड़ी जाति के 50 उत्तरदाताओं, अनुसूचित संवर्ग के कुल 50 एवं अल्पसंख्यक संवर्ग के 50 उत्तरदाताओं के क्रमशः 22 (44%), 37 (74%) एवं 44 (88%) परिवारों में 2 से अधिक बच्चे हैं। इस तरह, के परिणाम के संदर्भ में कहा जा सकता है, कि अधिक बच्चे वाले परिवारों की संख्या सभी संवर्ग में है, लेकिन अपेक्षाकृत अनुसूचित जाति एवं अल्पसंख्यक संवर्गों के उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है, जहाँ दो से अधिक बच्चे हैं।

सारणी संख्या (ii) के अवलोकन से स्पष्ट है, कि जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति व्यक्तियों की शिक्षा संबंधी कारक से प्रभावित है। क्योंकि कुल 100 अशिक्षित उत्तरदाताओं में मात्र 21 अर्थात् 21 प्रतिशत् उत्तरदाताएँ 2 से कम बच्चे वाले परिवार से संबंधित है, जबकि 79 अर्थात् 79 प्रतिशत उत्तरदाताएँ 2 से अधिक बच्चे वाले परिवार से संबंधित है। इसी तरह कुल 100 शिक्षित परिवारों में मात्र 24 अर्थात् 24

प्रतिशत् उत्तरदाताओं के परिवारों में 2 से अधिक बच्चें है। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है, कि जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति अशिक्षित परिवारों में शिक्षित परिवारों की अपेक्षा अधिक है।

सारणी संख्या (iii) के अवलोकन से स्पष्ट है, कि जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति पर धार्मिक अवधारणा का भी पभाव पड़ता है। इस संदर्भ में परिणाम में पाया गया है, कि अल्पसंख्यक परिवारों में 2 से अधिक बच्चे वाले परिवारों की संख्या (79 अर्थात 79 प्रतिशत) है, जबकि मात्र 21 प्रतिशत परिवारों में 2 से कम बच्चे हैं। इसी तरह, कुल हिन्दू 100 उत्तरदाताओं में 32 अर्थात 32 प्रतिशत परिवारों में 2 से कम बच्चे हैं, जबकि 68 अर्थात 68 प्रतिशत परिवारों में 2 से अधिक बच्चे है। इस तरह स्पष्ट है कि 2 से अधिक बच्चे वाले परिवारों की संख्या दोनों धर्मों के उत्तरदाताओं के परिवारों में है, जबकि अल्पसंख्यक उत्तरदाताओं के परिवारों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है।

सारणी संख्या (iv) के अवलोकन से स्पष्ट है, कि विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करने वाले लोगों में भी जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ भी निम्न है। इस संदर्भ में स्पष्ट है, कि अन्य व्यवसाय करने वाले लोगों की तुलना में निम्न स्तर के कार्य करने वाले उत्तरदाताओं के परिवार में दो से अधिक बच्चे हैं। हलाँकि अन्य भिन्न–भिन्न व्यवसायों (नौकरी, व्यवसाय, कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों में) को करने वाले उत्तरदाताओं के परिवारों में भी दो से अधिक बच्चों वाले परिवारों की संख्या अधिक है, लेकिन निम्न स्तर के कार्य करने वाले वैसे उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है, जिनके परिवार में दो से अधिक बच्चे हैं।

निष्कष :

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है, कि

(i) अनुसूचित वर्ग एवं अल्पसंख्यक वर्ग के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक है,

(ii) शिक्षित परिवार की अपेक्षा अशिक्षित परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक है,

(iii) अल्पसंख्यक समुदाय के परिवारों में हिन्दू परिवारों की अपेक्षा जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक है एवं

(iv) निम्न स्तर के कार्य करने वाले उत्तरदाताओं के परिवारों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियाँ अधिक है।

सुझाव :

सुझाव के रूप में शोधार्थी का कहना है कि बढती हुई जनसंख्या हर दृष्टिकोण से समस्यात्मक है और जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए व्यापक स्तर पर शोध कार्य की आवश्यकता है, जिससे मानव का कल्याण हो सके।

संदर्भ सूची :

सुष्मिता के० (2009) : जनसंख्या वृद्धि पर लोगों के जीवन स्तर के भिन्नता के प्रभाव का अध्ययन, पोषण एवं स्वास्थ्य विज्ञान आधारित शोध पत्रिका, वॉल्यूम–2, अंक–3, 117–123

कृष्णा, मूर्त्ति (2010) : जनसंख्या वृद्धि की स्थिति पर धर्म आधारित कारक के प्रभाव का अध्ययन, मानव स्वास्थ्य एवं पोषण आधारित पत्रिका, कल्याणी प्रकाशन,–2(4), 176–182

रागिणी, (2000) : जनसंख्या वृद्धि पर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन, आहार एवं पोषण पत्रिका, वॉल्यूम 22(2), 65–71

पंडा, जे० (1999) : जनसंख्या नियोजन के संदर्भ में परिवार कल्याण कार्यक्रम की भूमिका का अध्ययन, स्वास्थ्य आधारित अर्थ विज्ञान पत्रिका, वॉल्यूम–23, 112–121

***